यह कैसा समय

जूझ रही है दुनिया सारी,

कैसी चुनौती लाई कोरोना महामारी,

भुगत रहा है मानव दल,

अपने ही कर्मों का फल।

फैल गया सर्वत्र बीमारी का भय,

मानव जीवन में कैसा आ गया समय।

सदियों से किए हैं हमने आविष्कार,

नई तकनीकों व दवाइयों को बनाया बार-बार।

फिर कैसे दल-दल में गए हम फिसल,

अब भोग रहे हैं आत्मग्लानि हर पल।

फैल गया सर्वत्र बीमारी का भय,

मानव जीवन में कैसा आ गया समय।

हम सबको मिलकर देना होगा जवाब,

क्यों किया हमने अपनी पृथ्वी को खराब,

क्यों नहीं रहे हम सावधान,

क्यों नहीं रख सके धरती का ध्यान?

फैल गया सर्वत्र बीमारी का भय,

मानव जीवन में कैसा आ गया समय।

अभ भी वक्त है हमारे पास,

चलो ढूंढे पृथ्वी को सुधरने का राज़,

उठो, सही मार्ग चुनो, समझो जीवन का भाव,

मत दो अपनी पृथ्वी को घाव।

फैल गया सर्वत्र बीमारी का भय,

मानव जीवन में कैसा आ गया समय।

ज़ीनिया भट्टचार्य

कक्षा- १० बी